15/10/2020 I st

No. of Printed Pages : 2

SAP-03

2020

SAP
SET-3
हिंदी आशुलिपि
(गति : 80 शब्द प्रति मिनट)

निर्धारित समय : पाँच मिनट] *[पूर्णांक : 135*

स्वाधीनता के पश्चात देश में सार्वजनिक क्षेत्र का उदय मुख्य रूप से इस लक्ष्य से हुआ कि विशेष महत्त्व के / उद्योगों के विकास का दायित्व सरकार सम्भाले । उसी नीति के आधार पर गत दशक में अनेक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों ¼

में सरकार // ने प्रवेश किया । लेकिन सरकारी क्षेत्र के विस्तार से केन्द्रीयकरण तथा एकाधिकार प्रवृत्तियों में न ½

कमी हुई और न वृद्धि /// हुई है । इस आर्थिक शक्ति के केन्द्रीय को रोकने का सबसे अच्छा तरीका कर भार है । ¾

लेकिन हमारे यहाँ की (1) कर व्यवस्था से वह लक्ष्य कृषि आय पर कर मुक्ति देकर तथा अविभक्त हिन्दू परिवार के (1)

कारण पूरा नहीं होता । / लोग कर बचाने के लिए इन दो मुख्य स्थितियों की शरण लेकर कर बचा लेते है । इस ¼

सन्दर्भ में एक // बात और भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि आय में जो असमानताएँ हैं उसे केवल ऊपर वालों ½

की गर्दन /// काटने से ही समाप्त नहीं होगी । असमानता मिटाने के लिए हमें और उत्पादन बढ़ाना होगा ताकि ¾

आम आदमी का जीवन (2) स्तर ऊँचा हो सके । अमेरिका एक पूँजीवादी देश होकर भी वहाँ आय की असमानताएँ (2)

इतनी नहीं होती हैं जितनी हमारे / यहाँ हैं । यहाँ तक कि सोवियत संघ में आय की असमानताएँ अमेरिका से ¼

ज्यादा हैं । भारत के सरकारी क्षेत्र में // एक छोटे चपरासी को 500 रु. मासिक मिलता है और सरकारी उद्योग के ½

प्रमुख प्रबन्धक को दस हज़ार मिलते हैं । /// इस प्रकार सरकारी क्षेत्र में ही यह अन्तर 20 गुना है जबकि निजी ¾

क्षेत्र में तो यह अन्तर सैकड़ों गुना (3) तक है । लेकिन अमेरिका में यह अन्तर 10 गुना से ज्यादा नहीं है । (3)

सरकारी क्षेत्र के विस्तार ने ही निश्चित / रूप से आर्थिक शक्ति के केन्द्रीयकरण और एकाधिकार की ¼
प्रवृत्तियों के विरुद्ध एक विकल्प प्रस्तुत किया है । लेकिन यह विकल्प // इतना शक्तिशाली नहीं बन पाया है कि ½
केन्द्रीयकरण और एकाधिकार की प्रवृत्तियों को समाप्त कर दे । राष्ट्र के दस करोड़ /// रुपये के विनियोग सरकारी ¾
क्षेत्र में करके भी हम उस विनियोग से इतने लाभ एवं परिणाम नहीं प्राप्त कर सके (4) हैं, जितने हमें प्राप्त करने (4)
चाहिए । सरकारी क्षेत्र की इस दुर्दशा के अनेक कारण हैं, जिनमें मुख्य है, कुशल प्रबन्ध / का अभाव तथा लोगों में ¼
कठिन परिश्रम करने की नैतिक भावना की कमी । आज चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है । // छोटे से ½
कर्मचारी से लेकर बड़े-बड़े अफसरों तक में यह भ्रष्टाचार फैला हुआ है । आयोजित काम कराने के लिए /// भी ¾
घूस देनी पड़ती है तभी वह कार्य होता है, नहीं तो लोगों को परेशान किया जाता है । लोग अपनी (5) इच्छा से घूस (5)
नहीं देते ।

(405 शब्द)